कुण्डलपुर के बड़ेबाबा विधान

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना

vidya suvrat sangh

vidya ke suvratsagar

कृति	:	कुण्डलपुर के बड़े बाबा विधान एवं दीप अर्चना-ऋद्धि विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	पावन वर्षायोग 2024, दमोह
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अरिहंत जैन (गोलू), सागर मोबाइल-8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

दीप अर्चना करने के लिए

स्वस्तिक बनाकर प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक दीपक सजाते हुए 48 मंत्रों के साथ दीप अर्चना करना चाहिए।

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्री वृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह **कुण्डलपुर के बड़े बाबा श्री वृषभनाथ भगवान** की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य एवं **नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज** के आज्ञानुवर्ती शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'कुण्डलपुर के बड़े बाबा विधान एवं दीप अर्चना-ऋद्धिविधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से 48 दीपों/अर्घ्यों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है। साथ ही यदि कोई चाहे तो बड़े बाबा के 48 व्रत भी कर सकते हैं।

इस कृति का प्रकाशन पूज्य मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज के स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में किया जा रहा है। जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया साथ ही विकास जी गोधा (विकास ऑफसेट) भोपाल जिन्होंने इस विधान के मुद्रण में सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा० ब्र० संजय, मुरैना

मंगल गीत

पूज्य बड़े बाबा जी शोभें, नव मंदिर के प्रांगण में।
करो महोत्सव मिलकर भक्तो, कुण्डलपुर के आँगन में॥

बच्चो और जवानो नाचो, माँ बहिनो गाओ शुभ गीत।
खूब तालियाँ वृद्ध बजाकर, जय-जयकार लगाओ मीत॥
पुण्य कमाओ हर्ष मनाओ, धन्य घड़ी इस पावन में।
करो महोत्सव...॥१॥

भक्त जनों को सदा खुला है, पूज्य बड़े बाबा का द्वार।
जो चाहो जब जितना चाहो, भर लो तुम अपना भण्डार॥
आज गँवाया यह अवसर तो, पाओगे ना जीवन में।
करो महोत्सव...॥२॥

दान करो धन समय लगाओ, मिले न मौका बारम्बार।
फिर पछताये क्या होगा जब, चली जाएगी पुण्य बहार॥
ज्यों बाबा की विजय हुई त्यों, हो अपनी भव कानन में।
करो महोत्सव...॥३॥

रूप मनोहर बाबा का है, जो करता कर्मों का नाश।
जब कोई भी साथ न देवे, तब भी बाबा तेरे साथ॥
भाव-भक्ति का दीप जलाओ, मन के सूने आँगन में।
करो महोत्सव...॥४॥

पार्श्वनाथ जी आजू-बाजू, जहाँ देखिए नाथ-हि-नाथ।
बीचों-बीच बड़े बाबा हैं, जिनको झुकता सबका माथ॥
टीले पर मंदिर शोभित यों, सूरज ज्यों नील गगन में।
करो महोत्सव...॥५॥

नहीं मिला है नहीं मिलेगा, बाबा जैसा दूजा रूप।
छोटे बाबा की इच्छा थी, मंदिर हो बाबा अनुरूप॥
मिलन बड़े छोटे बाबा का, 'सुव्रत' धर लो आँखन में।
करो महोत्सव...॥६॥

===

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्..। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फु हार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

लघु सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण (जोगीरासा)

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। - ४

१. वृषभनाथ पहले तीर्थंकर, धर्म प्रदाता स्वामी।
षट्कर्मों के दाता जिनवर, मोक्षमार्ग के दानी॥
इक्ष्वाकु कुल के श्री नंदन, देह सुनहरी धारी।
वृषभनाथ को करके नमोस्तु, मिलती मोक्ष सवारी॥
ओम्...

२. नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नंदा।
वृषभ चिह्न पहचान आपकी, देते परमानंदा॥
अष्टापद का सर्व सिद्धवर, कूट त्याग के स्वामी।
मोक्ष गए सो करें नमोस्तु, 'सुव्रत' विद्या धामी॥
ओम्...

३. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
वृषभनाथ को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम्...

विघ्नविनाशक बड़ेबाबा महामण्डल विधान

'श्री कुण्डलपुरस्थ बड़ेबाबा श्रीवृषभनाथाय नमः'

प्रस्तावना स्तवन

(दोहा)

भारत में विख्यात है, कुण्डलपुर शुभ धाम।
जहाँ बड़ेबाबा रहे, भक्तों के भगवान॥१॥
वृषभनाथ भगवान को, बारम्बार प्रणाम।
पूजा अर्चा अब करें, सफल बनें सब काम॥ २॥
सफल बनें शुभ काम सब, हो मङ्गलमय लोक।
रहो आप जयवन्त प्रभु, तुम पद में मम धोक॥ ३॥

ज्ञानोदय छन्द

नमन करूँ वृषभेश पदों में, अनुपम जिनवर हितकारी।
ज्ञानामृत बरसाने वाले, जिनको पूजैं नर-नारी॥
चार घातिया कर्म नाश कर, केवलज्ञान राज्य पाया।
मुक्तिरमा को पाने उनका, सबसे पहले मन भाया॥१॥
समवसरण में नाथ विराजे, ईश दिगम्बर सुखसागर।
तीन लोक के तिलक मनोहर, तीर्थङ्कर जी गुणगागर॥
अन्तरङ्ग बाहर का वैभव, उसके स्वामी आप रहे।
नाथ अनाथों के भी तुम हो,करुणासागर आप रहे॥ २॥
स्वपर प्रकाशी दीप अलौकिक, पाप तिमिर के नाशक हो।
ज्ञान दिवाकर आप निरञ्जन, कर्म शत्रु के घातक हो॥
आठों प्रातिहार्य से मण्डित, पण्डित आप तपोधन हो।
हे! सर्वज्ञ हितैषी प्रभुवर, रत्नत्रयमय भगवन हो॥३॥
आप बड़ेबाबा कहलाते, वृषभनाथ विख्यात रहे।
पद्मासन में आप विराजे, शुभ परिकर के साथ रहे॥
देश विदेशों में चर्चित हो, अर्चित भक्तों के द्वारा।
हे! मङ्गलमय मङ्गलकारी, हरो अमङ्गल दुख सारा॥ ४॥
नाम आपका मङ्गलमय है, ध्यान आपका मङ्गलमय।
मन्त्र आपका मङ्गलमय है, जाप आपका मङ्गलमय॥

धाम आपका मङ्गलमय है, द्वार आपका मङ्गलमय।
शरण आपकी मङ्गलमय है,चरण आपके मङ्गलमय॥ ५॥
प्रभु दर्शन भी मङ्गलमय है, श्रेष्ठ संस्तवन मङ्गलमय।
पुण्य कथा भी मङ्गलमय है, थुती आपकी मङ्गलमय॥
पूजन अर्चन मङ्गलमय है, शुभ विधान भी मङ्गलमय।
जहाँ आपका रहे बसेरा, कण-कण सारे मङ्गलमय॥ ६॥
कुण्डलपुर तीरथ मङ्गलमय, सारा पर्वत मङ्गलमय।
और जिला दमोह मङ्गलमय, मध्यप्रदेश भी मङ्गलमय॥
है बुन्देलखण्ड मङ्गलमय, सुदेश भारत मङ्गलमय।
आर्यखण्ड भी जम्बूद्वीप भी, मध्यलोक भी मङ्गलमय॥
७ ॥
हे! बाबा कुण्डलपुर वाले, तुम्हें नमन हम करते हैं।
रूप आपका पाप विनाशक, नयनों में हम धरते हैं॥
हे जगपालक! हे उपकारक!, देव वीतरागी ज्ञानी।
यह सानन्द कार्य हो पूरा, दो आशीष यही स्वामी॥८॥

(दोहा)

नाम बड़े बाबा जपो, जीवन में अविराम।
उभय लोक की सम्पदा, और मिले शिवधाम॥४॥
हम आये हैं द्वार पर, छोड़ जगत के काम।
अब ऐसा पथ दीजिए, पापों की हो शाम॥५॥
द्रव्य सँजो कर लाय हम, बस पूजन के काज।
इष्ट देव को पूजकर, पाऊँ आतम-राज॥६॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

विधान माहात्म्य

(चौपाई)

करो बड़ेबाबा का दर्श, दर्शनीय जिन पाओ हर्ष।
पूज्य बनो पूजन कर भव्य, करो त्याग अपना कुछ द्रव्य॥ १॥
थे राजा था पन्ना राज्य, हार गये जब अपना राज्य।
तभी शत्रु ने छीना राज्य, डरकर भागे तजकर राज्य॥ २॥

कुण्डलपुर पर्वत पर आय, बड़े-बड़े थे तरु वनराय।
वहीं छिपे फिर शीघ्र नरेश, बदल लिया था अपना भेष॥ ३॥
भटक-भटक कर जङ्गल छान, मिले एक दिन श्री भगवान।
शीश बड़ेबाबा को टेक, उन्हें सुनायी इच्छा नेक॥४॥
दो आशीष मुझे जिनराज,पाऊँ यदि अपना निज राज्य।
तो मन्दिर का जीर्णोद्धार, करवाऊँगा आकर द्वार॥ ५॥
स्वर्ण छत्र बाबा के शीश, चढ़ा दिया अरु ले आशीष।
किया शत्रु पर जैसे वार, भागा दुश्मन पाकर हार॥६॥
राजा अपनी बात निभाय, बाबा का मन्दिर बनवाय।
किया शान्ति से अपना राज्य, और पूजते नित जिनराज॥७॥
मन्दिर का कर जीर्णोद्धार, उसने पायी निज सरकार।
दर्शन पूजन करो विधान, तभी सफल होंगे सब काम॥८॥

बड़ेबाबा का मन्त्र

''ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः''

मन्त्र का माहात्म्य

(जोगीरासा)

पूज्य बड़ेबाबा का जिसने, मंत्र जपा यह साँचा।
उसके काम बनेंगे सारे, होगा बाल न बाँका॥
तन-मन-वाणी शुद्ध बने सब, मिले शान्ति का द्वारा।
कष्ट विघ्न सब नश जाऐंगे, पुण्य मिलेगा सारा॥१॥
इस भव में यश वैभव पाए,और राज्य सुखकारी।
पर भव में भी सुखी रहे वह, मिले सम्पदा सारी॥
यह सब लौकिक स्वार्थ पूर्ण कर, परमारथ भी देवे।
मिथ्यातम का पाप नशाकर, सम्यग्दर्शन देवे॥२॥
मन मन्दिर में हो उजियारा, रत्नत्रय निधि पावे।
जिसने मन्त्र पूज्य यह ध्याया, बाबा सम हो जावे॥
सो जग के प्राणी जन सारे, सदा मन्त्र यह ध्याओ।
आकर बाबा के द्वारे पर,मनवाञ्छित फल पाओ॥ ३॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

विधान प्रारम्भ

स्थापना

(ज्ञानोदय)

हे! कुण्डलपुर वाले बाबा, हे! चैतन्य चमत्कारी।
उर के कमलाशन पर आओ, वृषभनाथ अतिशयकारी॥
तुम्हें पुकारा भक्तों ने जो, द्रव्य सँजोकर लाये हैं।
कर आह्वानन थापन करने, बाबा! तुम्हें बुलाये हैं॥
द्वार आपके जब आते तो, जग आकर्षक सब झूठे।
जो मिलता आनन्द उसी से, कर्म जाल बन्धन टूटे॥
दर्शन पूजन करके अब हम, भाव यही मन में लाते।
बनें बड़ेबाबा जैसे सो, शीश झुका हम गुण गाते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋ द्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म वृषभनाथ भगवन्! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं...)

(रोला)

स्वर्ण कलश में क्षीर-सिन्धु सम जल जो लाते।
तुम चरणों में उसे, चढ़ा निज भाग्य जगाते॥
सो प्रासुक जल शुद्ध, लाय हम पूजा करने।
करके आतम शुद्ध, सिन्धु-भव पार उतरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट-प्रातिहार्य संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

सुरभित चन्दन शुद्ध, सदा केसर जो लाते।
तुम चरणो में उसे,चढ़ा तन सुन्दर पाते॥
सो चन्दन यह शुद्ध, लाय हम पूजा करने।
हरने भव संताप, मोक्ष की छाया वरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त, सर्वविघ्न-विनाशक, सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं...।

उज्ज्वल अक्षत शुद्ध, सदा जो लेकर आते।
तुम चरणों में उन्हें, चढ़ा निज वैभव पाते॥

सो अक्षत ये शुद्ध, लाय हम पूजा करने।
यहाँ बड़े पद पाय, और अविनाशी बनने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

खिले सुगन्धित पुष्प, शुद्ध सुन्दर जो लाते ।
तुम चरणों में उन्हें चढ़ा, सब रोग नशाते॥
सो सुरभित ये पुष्प, लाय हम पूजा करने।
काम रोग को नाश, रूप चिन्मय का धरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

शुद्ध साफ पकवान, पात्र भर-भर जो लाते।
तुम चरणों में उन्हें, चढ़ा यश नाम कमाते॥
सो सुन्दर नैवेद्य, लाय हम पूजा करने।
क्षुधा रोग को नाश, साम्य अपने उर धरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सुन्दर दीपक जला-जला मणिमय जो लाते।
तुम चरणों में करें, आरती अन्ध नशाते॥
सो चमकित यह दीप, लाय हम पूजा करने।
मोहतिमिर को नाश,प्रकाशित आतम करने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप सुगन्धित चूर्ण, बहु कर्पूर जो लाते।
तुम चरणों में उसे, खेय जग मैत्री पाते॥
सो सुरभित यह धूप, लाय हम पूजा करने।
अष्ट कर्म की धूम, उड़ा चित शोधन करने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म- वृषभनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भाँति-भाँति के थाल-,थाल भर फल जो लाते।
तुम चरणों में उन्हें, चढ़ा फल इच्छित पाते॥

सो प्रासुक फल शुद्ध, लाय हम पूजा करने।
स्वर्ग और फिर शीघ्र,मोक्ष फल पावन वरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

सुन्दर मनहर दिव्य, द्रव्य आठों जो लाते।
तुम चरणों में उन्हें, चढ़ा पूजित बन पाते॥
सो प्रासुक यह अर्घ, लाय हम पूजा करने।
निर्मल आतम शुद्ध, बना अनुपम सुख वरने॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न-अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पञ्चकल्याणकों के अर्घ

(ज्ञानोदय)

गर्भकल्याणक

तज सर्वार्थ सिद्धि सुर आलय, दूज कृष्ण आषाढ़ रही।
मरुदेवी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणक-प्राप्तये बड़ेबाबा श्रीवृषभनाथ -जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥

जन्म कल्याणक

चैत्र कृष्ण नवमी जब आयी, जन्म अयोध्या नगर लिया।
नाभिराय राजा का आँगन, और जगत सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम,आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीं चैतकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणक-प्राप्तये बड़ेबाबा श्री वृषभनाथ- जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥

तप कल्याणक

चैत कृष्ण नवमी को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
तप कल्याणक मङ्गलमय सो, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकप्राप्तये बड़ेबाबा श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥

केवलज्ञानकल्याणक

फाल्गुनकृष्णा ग्यारस तिथि को,घातिकर्म सब नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञान कल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीं फाल्गुनकृष्ण एकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्तये बड़ेबाबा श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥

मोक्षकल्याणक

माघ कृष्ण चौदस प्रभात में, पद्मासन से कर्म नशा।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, हम पाएं सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बंधन सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्ष कल्याणक सो हम,आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्तये बड़ेबाबा श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥

जयमाला

(चौपाई)

पूज्य बड़ेबाबा को वन्दूँ, धर्म विधायक प्रभु को वन्दूँ॥
आदिब्रह्म युग-स्त्रष्टा वन्दूँ, नाभिजात निज दृष्टा वन्दूँ॥ १॥
वृषभनाथ तीर्थंकर वन्दूँ, कर्मसूर क्षेमङ्कर वन्दूँ॥
धर्मसूर पथ दाता वन्दूँ, स्वर्ग मोक्ष पथ दाता वन्दूँ॥ २॥
हे कैलाश पतीश्वर! वन्दूँ, एकानेक यतीश्वर! वन्दूँ॥
हे तीर्थेश मुनीश्वर! वन्दूँ, हे लोकेश ऋषीश्वर! वन्दूँ॥ ३॥
आदिप्रवर्तक भगवन् वन्दूँ, जगपालक हे सज्जन! वन्दूँ॥
ज्ञानरूप श्री अर्हत् वन्दूँ, मुक्तिवधू के भगवत् वन्दूँ॥ ४॥
रत्नत्रय के ईश्वर वन्दूँ, चिन्मय रूपी श्रुतवर वन्दूँ॥
प्रभु निज पर सुखकारक वन्दूँ, मोहशत्रु के नाशक वन्दूँ॥ ५॥
करुणासागर स्वामी वन्दूँ, नाम बड़ेबाबा नित वन्दूँ।
कुल इक्ष्वाकू नन्दन वन्दूँ, गुणसागर अभिनन्दन वन्दूँ॥ ६॥

धीर! वीर! जिनशासक वन्दूँ, कर्म घातिया नाशक वन्दूँ॥
ममता-मायानाशक वन्दूँ, विघ्नविनाशक नायक वन्दूँ॥ ७॥
सुख सम्पद के दायक वन्दूँ, यश कीर्ती पद दायक वन्दूँ॥
भाग्यविधाता भगवत् वन्दूँ, 'सुव्रत' के स्वामी नित वन्दूँ॥ ८॥

(दोहा)

पूज्य बड़ेबाबा भजो, जीवन में अविराम।
उभयलोक वैभव तभी, मिले मोक्ष शिवधाम॥
जो पूजें बाबाबड़े, और करे गुणगान।
वे पाते हैं श्रेष्ठ पद, और कीर्ति सम्मान॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चतुष्षष्ठिऋद्धिसम्पन्न- अष्टप्रातिहार्य-संयुक्त-सर्वविघ्नविनाशक-सर्वसिद्धिदायक-आदिब्रह्म-वृषभनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं...।

पूज्य बड़ेबाबा करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलि...)

अथ प्रथम वलय अर्घ्यावली

वृषभनाथ आदिम तीर्थंकर, अजितनाथ प्रभु विजित रहे।
शम्भव प्रभु सुख सम्पद दाता, अभिनन्दन गुण सहित रहे॥
सुमति सुमति के दायक प्रभुवर, पद्मप्रभु निर्मल स्वामी।
इनके सह बाबा की पूजन, धन सम्पद दे शिवगामी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वृषभ-अजित-शम्भव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-षट्तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

सुपार्श्व जिनवर मङ्गलदायक, चन्द्रप्रभु अकलङ्क करें।
सुविधि सुविधि के पूर रहे हैं, शीतल प्रभु संताप हरें॥
प्रभु श्रेयांश श्रेय दातारी, वासुपूज्य सब राग हरें।
इनके सह बाबा की पूजन, कर्म नाश कर रोग हरें॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-षट्तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

विमलनाथ विधिमल के नाशक, प्रभु अनन्त भगवान बने।
धर्मनाथ शिव शर्म विधायक, शान्ति शान्ति के धाम बने॥
कुन्थुनाथ हैं जगहितकारी, अरहनाथ दें सुखसाता।
इनके सह बाबा की पूजन, सिद्धि साधना शुभ दाता ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अरनाथ-षट्तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...॥३॥

मल्लिनाथ प्रभु मोह निवारक, मुनिसुव्रत सुव्रतदाता।
श्री नमिनाथ दिये पथ सम्यक्, नेमिनाथ करुणादाता॥
पार्श्वनाथ बल साहस देते, महावीर शिवपथ दाता।
इनके सह बाबा की पूजन, मंगलमय श्रुत की दाता॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वीर-षट् तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...॥४॥

पूर्णार्घ्य

पूज्य बड़ेबाबा मंगलमय, वृषभनाथ जो कहलाते।
चौबीसों जिनवर सुखदायक, शिवपथ हमको दिखलाते॥
चौबीसों भगवन को पूजें, आश्रय लेकर बाबा का।
बनें दयामय भगवन जैसे, नाम जपें जब बाबा का॥

(दोहा)

बड़े बड़ेबाबा बड़े, बड़े बनें वे लोग।
जो पूजें बाबा बड़े, बड़े-भाव, त्रय योग॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वृषभादिवीरपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

अथ द्वितीय वलय अर्घ्यावली

दर्शन-आवरणी को नाशा, अनन्तदर्शन को पाया।
युगपत् लोकालोक देखकर, निज आतम भी झलकाया॥
ऐसे अनन्तदर्शन वाले, श्री अर्हन्त देव स्वामी।
यों मण्डित बाबा की पूजन, पाप तिमिर हरती स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनन्तदर्शनमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥१॥

सकल ज्ञान-आवरणी नाशा, अनन्तज्ञान श्रेष्ठ पाया।
युगपत् लोकालोक जानकर, केवलज्ञान राज्य पाया॥

ऐसे केवलज्ञानी भगवन्, श्री अर्हन्त देव स्वामी।
यों मण्डित बाबा की पूजन, सम्यक् पथ दे शिवगामी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनन्तज्ञानमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥२॥

मोहनीय सारा ही हरकर, क्षायिक सम्यक् गुण पाया।
उससे सांसारिक दुख नाशा, अनन्त सुख तुमने पाया॥
ऐसे अनन्तसुख वाले प्रभु, श्री अर्हन्त देव जिनवर।
यों मण्डित बाबा की पूजन, हरती दुख कष्टों का घर॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनन्तसुखमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥३॥

क्षय करके सब अन्तराय को, अनन्तवीरज गुण पाया।
दूर परीषह उपसर्गों से,-होकर निजबल दर्शाया॥
यथावीर्य अनन्तगुण वाले, श्री अर्हन्त देव अनुपम।
यों मण्डित बाबा की पूजन, सब कष्टों का करे हनन॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनन्तवीर्यमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥४॥

अशोक तरुतल रूप मनोहर, ताप शोक सब नाश रहा।
पुष्पवृष्टि देवों द्वारा हो, जिससे लोक सुवास रहा॥
ऐसे प्रातिहार्य से मण्डित, श्री अर्हन्त देव प्यारे।
यों मण्डित बाबा की पूजन, तन के रोग हरे सारे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अशोकतरु-सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्य-मण्डित वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥५॥

दिव्यध्वनि सबकी हितकारी, कुमति कुपथ को नित हरती।
नाच-नाच सुर चँवर ढोरते, जिससे प्रभु छवि मन हरती॥
ऐसे प्रातिहार्य से मण्डित, श्री अर्हन्त देव न्यारे।
यों मण्डित बाबा की पूजन, मन के रोग हरे सारे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दिव्यध्वनि-चँवर-सत्प्रातिहार्यमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥६॥

उज्ज्वल सिंहासन पर शोभित, सूरज सम प्रभु अघहारी।
भामण्डल से भाग्य जगाते, भक्त आपके संसारी॥
ऐसे प्रातिहार्य से मण्डित, श्री अर्हन्त देव ज्ञाता।
यों मण्डित बाबा की पूजन, हर लेती सारी बाधा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सिंहासन-भामण्डल-सत्प्रातिहार्यमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥७॥

भाँति-भाँति की वाद्य सहित ही, बजे दुन्दुभी सुखकारी।
तीन छत्र माथे पर शोभित, जगदीश्वर अतिशयकारी॥
ऐसे प्रातिहार्य से मण्डित, श्री अर्हन्त देव दृष्टा।
यों मण्डित बाबा की पूजन, हमें दिलाती शिव निष्ठा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दुन्दुभि-छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यमण्डित -वृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥८॥

पूर्णार्घ्य

दर्श ज्ञान सुख वीर्य पूज्य अरु, प्रातिहार्य भी आठ रहे।
यथा अलौकिक वैभव शोभित, जिनबाबा का ठाठ रहे॥
भाव भक्ति से चाव शक्ति से, जिनने बाबा को पूजा।
वैभव ऐसा वे पाते हैं, उनसा होगा क्या दूजा?॥

(दोहा)

अन्तरङ्ग बहिरङ्ग की, श्री से शोभित आप।
पूजा देती आपकी, हमको पुण्य प्रताप॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अनन्तचतुष्टय-अष्टप्रातिहार्यमण्डित-वृषभनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

अथ तृतीय वलय अर्घ्यावली

जब से आतम तब से दर्शन, किन्तु शुद्ध ना वह होता।
सो चेतन भव-भव में भटके, दुख कष्टों से नित रोता॥
बिन पच्चीस दोष निर्मल जो, सम्यग्दर्शन कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-विधमिथ्यात्वकर्म-विनाशक -दर्शनविशुद्धि गुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१॥

विनय मोक्ष का पथ कहलाता, विनय बिना सुख किसे मिला?
विनय बिना तो इस जग में भी, नहीं किसी का होय भला॥
सुगुरु देव शास्त्रों का आदर, विनय पालना कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-मानकषायविनाशक-पञ्चविधि-विनय-सम्पन्नतागुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२॥

श्रेष्ठ अहिंसा व्रत का धरना, क्रोधादिक तज,शील रहा।
दोष रहित इनका आचरणा, शील व्रतानतिचार कहा॥
शीलवान सब जग में पूजित, शील दोष बिन सुखदाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः समस्त-दोषविनाशक-शीलव्रतेष्वनतिचार गुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥३॥

प्रभु अरहन्त देव भाषित जो, सप्ततत्त्वमय श्रुत प्यारा।
केवलज्ञान राज्य दिलवाता, सम्यग्ज्ञान वही न्यारा॥
नित अभ्यास उसी का करना, ज्ञान अभीक्षण कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः समस्त-अशुभोपयोगविनाशक-अभीक्ष्ण -ज्ञानोपयोगगुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥४॥

पञ्चेन्द्रिय के भव विषयों से, सुखाभास सबको होता।
इनसे सब सुख पाना चाहें, पर इनसे नित दुख होता॥
नित संसार दुखों से डरना, गुण संवेग कहा भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-पञ्चेन्द्रियविषयविनाशक-संवेगगुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥५॥

औषध ज्ञान अभय आहारा, चतुविध उत्तम दान रहा।
यथाशक्ति उत्तम विधि देना, तथा पात्र अनुसार कहा॥
कष्टनिवारक सम्पद दायक, श्रेष्ठ त्याग यह कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-ममत्व-मूर्च्छाविनाशक-शक्तितस्-त्यागगुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥६॥

शिवपथ के अनुकूल रहे जो, तप बारह विधि सुख दाता।
यथाशक्ति तन उग्र तपाना, पाप विनाशक है भ्राता॥
किन्तु खेद मन में ना लाना, यथाशक्ति तप कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-भोगाकांक्षाविनाशक-शक्तितपस्तप गुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥७॥

उत्तम साधक तप करते जो, स्वार्थ त्याग सब आशायें।
शीलवान उन तपोधनों पर, अगर विघ्न कुछ आ जाएं॥
शीघ्र निवारण उनका करना, साधु समाधी कहलाता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः स्वार्थबुद्धिविनाशक-साधुसमाधिगुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥८॥

साधुजनों को कर्म योग से, रोग व्यथा यदि जब होवे।
तो निर्दोष दवा भोजन दो, जिससे व्यथा दूर होवे॥
वैय्यावृत्ति कर्त्ता पाता, देह निरोगी सुख साता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सावद्यदोषविनाशक-वैय्यावृत्तिगुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥९॥

चार घातिया कर्म नशाकर, नन्त चतुष्टय को पाया।
प्रभु अर्हन्त केवली जिनने, सम्यक् शिवपथ दर्शाया॥
उन से निर्मल प्रीति राग ही, अर्हत भक्ति रही भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुदेव-राग-विनाशक-अर्हत्-भक्ति-गुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥१०॥

पञ्चाचारों रत्नत्रय से, जो नित ही शोभित रहते।
शिवपथ चलते और चलाते, गुरु आचार्य उन्हें कहते॥
उनसे निर्मल प्रीति राग ही, है आचार्य भक्ति भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुमार्ग-राग-विनाशक-आचार्य-भक्ति-गुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥११॥

जो उपदेश मोक्षपथ का दें, द्वादशाङ्ग श्रुत के ज्ञाता।
पूज्य चार अनुयोग पढ़ाते, बहुश्रुत जन अघतम हर्त्ता॥
उनसे निर्मल प्रीति राग ही, बहुश्रुत भक्ति रही भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुगुरु-राग-विनाशक-बहुश्रुत-भक्ति-गुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥१२॥

सप्त तत्त्व का वर्णन जिसमें, शिवपथ-दायी जिनवाणी।
सबको हित की राह दिखाए, प्रवचन है वह कल्याणी॥

उससे निर्मल प्रीति राग ही, प्रवचन-भक्ति रही भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुधर्म-राग-विनाशक-प्रवचन-भक्ति गुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥१३॥

समता धरना,जिनथुति करना, देव वंदना आचरणा।
प्रत्याख्यान प्रतिक्रम करना, कायोत्सर्ग प्रीति धरना॥
यथाकाल आवश्यक करना, अपरिहार्य-अवश्य भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः प्रमाद-दोष-विनाशक-आवश्यका-परिहीनतागुण-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१४॥

सम्यग्ज्ञान,ध्यान शिवसाधन, दया धर्म के पालन से।
त्याग तपस्या पूजादिक अरु, वीतरागता शासन से॥
धर्म अहिंसा का दिखलाना, प्रभावना जिनपथ भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः ख्याति-पूजा-लाभ-आकांक्षा-दोष-विनाशक-मार्गप्रभावनागुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥१५॥

शील अहिंसादिक व्रतधारी, जो अनुरागी जिनपथ के।
वे अपने धर्मी कहलाते, जो राही हैं शिव पथ के॥
उनसे निर्मल प्रीति राग ही, प्रवचन वत्सलता भ्राता।
पूज्य बड़ेबाबा की पूजा, करके प्राणी वह पाता॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-आसक्तिदोष-विनाशक-प्रवचन वत्सलत्व गुणप्राप्तये अर्घ्यं...॥१६॥

पूर्णार्घ्य

दर्शनशुद्धि विनय व्रत निर्मल, सतत ज्ञान अभ्यास करो।
धर संवेग दान सम्यक् दो, साधु समाधी नित्य करो॥
वैय्यावृत्ती अर्हत् भक्ती, श्रुत-आचार्य भक्ति प्रवचन।
अपरिहार्य आवश्यक जिनपथ, प्रभावना सह धर्म लगन॥

(दोहा)

बाबा की पूजा करो, सोलह भावन साथ।
जगत् पूज्य वैभव मिले, तीर्थंकर पद साथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः संसारचक्रविनाशक-षोडषकारणगुण-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अथ चतुर्थ वलय अर्घ्यावली

(अर्द्ध ज्ञानोदय)

सुरासुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः असुरकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१॥

नाग सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नागकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२॥

विद्युत सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विद्युत्कुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥३॥

सुपर्ण-सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सुपर्णकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥४॥

अग्नि सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अग्निकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥५॥

वात-सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वातकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥६॥

स्तनित-सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः स्तनितकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥७॥

उदधि सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः उदधिकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥८॥

द्वीप-सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः द्वीपकुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥९॥

दिक्-देवों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दिक्कुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१०॥

किन्नर सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः किन्नरेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥११॥

किम्पुरुषों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः किम्पुरुषेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१२॥

महोरगों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः महोरगेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१३॥

गन्धर्वों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गन्धर्वेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१४॥

यक्ष सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः यक्षेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१५॥

राक्षस सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः राक्षसेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१६॥

भूत सुरों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भूतेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१७॥

सुर पिशाच के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः पिशाचेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१८॥

ज्योतिषियों के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चन्द्रनामकेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥१९॥

ज्योतिष सुर प्रति इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भास्करेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२०॥

जो सौधर्म इन्द्र कहलाते, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सौधर्मेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२१॥

जो ईशान इन्द्र कहलाते, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः ईशानेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२२॥

सनत स्वर्ग के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सानत्कुमारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२३॥

जो माहेन्द्र इन्द्र कहलाते, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः माहेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२४॥

ब्रह्मस्वर्ग के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः ब्रह्मेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२५॥

लान्तव सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः लान्तवेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२६॥

शुक्र स्वर्ग के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शुक्रेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२७॥

शतार सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शतारेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२८॥

आनत सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः आनतेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥२९॥

प्राणत सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः प्राणतेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥३०॥

आरण सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः आरणेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥३१॥

अच्युत सुर के इन्द्र देव जो, निज परिवार सहित रहते।
सदा बड़ेबाबा की पूजा, कुण्डलपुर आकर करते॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अच्युतेन्द्रेण सपरिवारेण पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये अर्घ्यं...॥३२॥

पूर्णार्घ्य

भवनत्रिक के बीस इन्द्र अरु, वैमानिक के बारह हैं।
निज परिवार सहित सेवा में, इन्द्रशतक सब हाजिर हैं॥
दिव्य द्रव्य आठों लेकर के, भाव सहित नाचें गावें।
अपना जीवन सफल करें हम, दर्श पूज कर गुण गावें॥

(दोहा)

इन्द्रों से पूजित रहे, बाबा वृषभ जिनेश।
अर्घ्य चढ़ा हम आपको, पाएं पद परमेश॥ ३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सपरिवारचतुर्णिकायदेवेन्द्रैः पादारविन्दार्चिताय जिनगुण-सम्पत्ति-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अथ पंचम वलय अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय)

अणु से लेकर महास्कन्ध तक, विषय वस्तु रूपी जानें।
अपने-अपने योग्य ऋद्धि वह, अवधिज्ञान उसको मानें॥
भव्य जीव इस पूज्य ऋद्धि के, स्वामी बनते पलभर में।
अगर बड़ेबाबा को पूजें, भाव सहित धरकर उर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः शिरोरोगविनाशन समर्थ-अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१॥

विषय अचिन्तित अर्ध पूर्ण मन, मनुज लोक में जो जानें।
अवधिज्ञान का भाग अनन्ता, ज्ञान मनःपर्यय मानें॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वविघ्न-अशान्ति-विनाशन-समर्थ बहुश्रुतज्ञान सहित-मनःपर्ययबुद्धि-ऋद्धये अर्घ्यं...॥२॥

सब द्रव्यों की पर्यायों को, त्रयकालिक जो जान रहा।
पूजित लोकालोक प्रकाशी, वह ही केवलज्ञान रहा॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विशूचिकाज्वरादिरोगविनाशन-समर्थ-केवलज्ञान बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥३॥

बहुत शब्दमय बहुत लिङ्गमय, अर्थ अनन्तों जो रहते।
एक बीजमय बहु जो जाने, बीज बुद्धि उसको कहते॥
भव्य जीव इस पूज्य ऋद्धि के, स्वामी बनते पलभर में।
अगर बड़ेबाबा को पूजें, भाव सहित धरकर उर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः हृदय-रोगविनाशन-समर्थ-बीजबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥४॥

ज्यों कोठे में बहुतबीज पर,-अलग अलग सब धान्य रहें।
शब्द रूप बीजों को जानें, कोष्ठ बुद्धि हम उसे कहें॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः ममात्मनि विवेकज्ञान-जाग्रताय कोष्ठ-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥५॥

गुरु शिक्षा से इक पद पाकर, आगे-पीछे जान रहे।
यथा बुद्धि जिसकी होती है, पदानुसारी उसे कहे॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः परस्पर विरोध-विनाशन समर्थ-पदानुसारिणि बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥६॥

श्रोतेन्द्रिय उत्कृष्ट बाह्य भी, शब्द अनक्षर अक्षरमय।
युगपद सुन क्रमशः जो कह दें, वो संभिन्न श्रोतृ गुणमय॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्वास-रोग-विनाशन-समर्थ-संभिन्नश्रोतृ बुद्धि ऋद्धये अर्घ्यं...॥७॥

रसनेन्द्रिय उत्कृष्ट बाह्य भी, स्वाद जानते रस नाना।
तप से जो उत्पन्न ऋद्धि है, दूरास्वादन वो माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चौरादिभय-विनाशन-समर्थ-दूरास्वादित्व-बुद्धि ऋद्धये अर्घ्यं...॥८॥

स्पर्शेन्द्रिय उत्कृष्ट बाह्य भी, स्पर्श जानते सब ही जो।
तप से जो उत्पन्न ऋद्धि है, दूरास्पर्श ऋद्धि है वो॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वराज्यादि-भय-विनाशन-समर्थ-दूरस्पर्शत्वबुद्धि ऋद्धये अर्घ्यं...॥९॥

घ्राणेन्द्रिय उत्कृट बाह्य भी, गंध जानते सब ही जो।
अधिक क्षयोपशम से होती जो, दूर-घ्राण ऋद्धि है वो॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नासिका-रोग-विनाशन-समर्थ-दूर-घ्राणत्वबुद्धि ऋद्धये अर्घ्यं...॥१०॥

कर्णेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के, बाह्य शब्द भी सुन पाना।
अधिक क्षयोपशम से होती जो, दूर श्रवण ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कर्णरोग-विनाशन-समर्थ दूर-श्रवणत्व-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥११॥

नेत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के, बाह्य दृश्य भी लख पाना।
चक्री से भी ज्यादा लखना, दूरदर्शित्व यह माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अक्षिरोग-विनाशन-समर्थ-दूरदर्शित्व-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१२॥

छोटी-बड़ी सभी विद्यायें, जिसके पढ़ने पर आयें।
बुद्धि ऋद्धि अभिन्न दशपूर्वी, ज्ञानी जन वो बतलायें॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वसंवेदनाय दशपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१३॥

द्वादशाङ्ग श्रुतपूर्व चतुर्दश, ज्ञाता शुभ सम्यक् दृष्टि।
बुद्धि ऋद्धि वह चतुदशपूर्वी, देव पूज्य जिनकी सृष्टि॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः स्वसमय-परसमयसंवेदनाय चतुर्दश-पूर्वित्व बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१४॥

आठ निमित्तों में परिपूरित, प्राप्त शुभाशुभ फल जानें।
अष्टाङ्ग महानिमित्त ऋद्धी,उसको ज्ञानी जन मानें॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः जीवित-मरणादि-ज्ञानयुक्त-अष्टाङ्ग -महानिमित्त-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१५॥

बिना पढ़े उत्कृष्ट क्षयोपशम, से श्रुत सूक्ष्म तत्त्व जानें।
प्रज्ञाश्रमण बुद्धि ऋद्धी वह, चतुप्रज्ञाधारी मानें॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः आयुष्यावसान-संवेदनज्ञानयुक्त-प्रज्ञा श्रमणत्व-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१६॥

गुरु शिक्षा बिन निज आतम के, शुभ क्षयोपशम तप बल से।
इससे जो उत्पन्न जानते, बुद्धि ऋद्धि प्रत्येक उसे॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः प्रतिवादविद्याविनाशन-समर्थ-प्रत्येक-बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१७॥

सुर गुरु और सभी परमत को, मौन करे जिनकी वाणी।
पूज्य वादित्व बुद्धि ऋद्धि वह, बतलाते सम्यक्ज्ञानी॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वराजा-प्रजादिप्रतिवाद-विनाशन-समर्थ-वादित्वबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं...॥१८॥

परमाणू सी देह बनाकर, निकल छिद्र में से जाना।
लघू विक्रिया की क्षमता ही, शुभ अणिमा ऋद्धी माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दुर्भिक्षारि-उपद्रव-विनाशन समर्थ-अणिमा-विक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥१९॥

मेरूपर्वत से भी अपने, तन को बहुत बड़ा करना।
गुरू विक्रिया की क्षमता ही, शुभ महिमा ऋद्धी कहना॥
भव्य जीव इस पूज्य ऋद्धि के, स्वामी बनते पलभर में।
अगर बड़ेबाबा को पूजें, भाव सहित धरकर उर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्व-वृक्ष-लता-मारीं विनाशन-समर्थ-महिमा-विक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥२०॥

अपनी देह पवन से हल्की, बिल्कुल हल्की सी करना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, शुभ लघिमा ऋद्धी करना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वात-पित्त-कफ-विकारादि-रोग-विनाशन-समर्थ-लघिमाविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥२१॥

अपनी देह वज्र से भारी, बहुत-बहुत भारी करना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, शुभ गरिमा ऋद्धी कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-बंधन-विनाशन समर्थ-गरिमा-विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२२॥

भू पर रहकर सूर्य चन्द्र अरु, मेरु शिखा को छू पाना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, पूजित प्राप्ति ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वमनोवाञ्छित-सिद्धिसहित-प्राप्तिविक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२३॥

जल में भू सम भू पर जल सम, सरल गमन करते जाना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, शुभ प्राकाम्य ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्पादिविष-विनाशन-समर्थ प्राकाम्य-विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२४॥

तीन लोक की जनसत्ता के, पूजित स्वामी बन जाना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, शुभ ईशत्व ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वराज-सम्मान-सहित-ईशत्व-विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२५॥

ज्ञान तपस्या बल आदिक से, तीन लोक को वश करना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, वशित्व ऋद्धी शुभ कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वतन्त्र-मन्त्र-विद्या-बन्धन-विनाशन समर्थ-वशित्व-विक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥२६॥

तरु पर्वत के मध्य छेद बिन, निकल सहज चलते जाना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, अप्रतिघात ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दुष्टजनादिकृतभय-विनाशन समर्थ-अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२७॥

सम्यक् तप बल के द्वारा ही, होकर अदृश्य ना दिखना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, अन्तर्धान ऋद्धि कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दीक्षा-समाधिसुख प्रदान समर्थ-अन्तर्धान-विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२७॥

एक साथ अपनी काया के, बहु आकार रूप करना।
यथा विक्रिया की क्षमता ही, कामरूपी ऋद्धि कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कामित-वस्तु-प्रदान-समर्थ-कामरूपित्व-विक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥२९॥

खड़े बैठ कोई आसन में, खुले गगन में ही चलना।
ऐसी क्षमता गमन नभस्तल, चारण क्रिया ऋद्धि कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अंतरिक्षगमन-प्रदान-समर्थ नभस्तलगामित्व-चारण क्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३०॥

जल पर चलकर जल जीवों को, घात नहीं कुछ पहुँचाना।
ऐसी क्षमता ही जल चारण, क्रिया ऋद्धि उसको माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अतिवृष्टि-अल्पवृष्टि-असमयवृष्टि-भय विनाशन-समर्थ जलचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३१॥

जंघा बिना उठाये नभ में, चतु अंगुल ऊपर चलना।
बहुयोजन चलने की क्षमता, जंघा चारण वह कहना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नष्ट-पदार्थ-चिन्ता-विनाशन-समर्थ जंघाचारणक्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥३२॥

फूल फलों पत्तों पर चलना, पर जीवों को घात न हो।
पुष्प-पत्र- फलचारण क्रिया, ऋद्धि पूज्य कहलाती वो॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः वनस्पतिकृत-विषवेदना-विनाशन समर्थ फल-पुष्प-पत्र-चारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३३॥

अग्नि शिखा पर और धूम पर, जीवघात बिन चल जाना।
ऐसी क्षमता अग्नि धूम शुभ, चारण क्रिया ऋद्धि माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भूकम्पादि-भय-विनाशन-समर्थ-अग्निधूमचारण क्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३४॥

जल जीवों के घात बिना ही, मेघ धार पर चल जाना।
क्रिया मेघधारा चारण की, पूज्य ऋद्धि उसको माना॥
भव्य जीव इस पूज्य ऋद्धि के, स्वामी बनते पलभर में।
अगर बड़ेबाबा को पूजें, भाव सहित धरकर उर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः तड़ितभयविनाशन समर्थ-मेघ-धाराचारण क्रिया ऋद्धये अर्घ्यं...॥३५॥

मकड़जाल के तन्तू कोमल, बिन बाधा उन पर जाना।
ऐसी क्षमता तन्तू चारण, क्रिया ऋद्धि पूजित माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वाङ्गपीड़ाविनाशन-समर्थ-तन्तुचारण क्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३६॥

सूर्य चन्द्र आदिक किरणों पर, नभ श्रेणी पर चल जाना।
ऐसी क्षमता ज्योतिश्चारण,क्रिया ऋद्धि पूजित माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नवग्रहपीड़ा-विनाशन-समर्थ-ज्योतिश्चारण क्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३७॥

पवन पंक्ति का आश्रय लेकर, सहज गमन करते जाना।
ऐसी क्षमता मारुच्चारण, क्रिया ऋद्धि पूजित माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः प्रचण्डपवनोद्भवभय-विनाशन-समर्थ मरुच्चारण क्रियाऋद्धये अर्घ्यं...॥३८॥

ले दीक्षा मरणान्त काल तक, पक्ष मास अरु बरसों तक।
कर उपवास तपस्या करते, ऋद्धि उग्र तप के धारक॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भण्डवचनादिकृतपीड़ा-विनाशन समर्थ उग्रतप ऋद्धये अर्घ्यं...॥३९॥

बड़े-बड़े उपवास करें पर, मन वच काया दीप्ति बढ़े।
देह श्वांस सुरभित हो जाती, ऋद्धि दीप्ति तप वही रहे॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सेनादिकृतभयविनाशन समर्थ -दीप्तितप ऋद्धये अर्घ्यं...॥४०॥

तपे लोह पर जल ज्यों होता, जिनकी त्यों आहार दशा।
नहीं मूत्र मल, तप से होवे, ऋद्धि तप्त तप उसे कहा॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अग्निभय-विनाशन-समर्थ-तप्ततप-ऋद्धये अर्घ्यं...॥४१॥

सिंह निःक्रीडित आदि करें व्रत, बहुत ऋद्धियों के स्वामी।
ऋद्धि महातप वह कहलाती, बतलाते सम्यक् ज्ञानी॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नदीसरोवरकूपादिभयविनाशन-समर्थ-महातप ऋद्धये अर्घ्यं...॥४२॥

रोगों से पीड़ित होकर भी, तप करने से ना डरते।
वन में रहकर सब दुख सहते, ऋद्धि घोरतप जिन कहते॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विषरोगादिभय विनाशन समर्थ-घोर-तप-ऋद्धये अर्घ्यं...॥४३॥

यथा शक्तियाँ तपकर पाते, लोक पलट दें सिन्धु सुखा।
घोर पराक्रम ऋद्धि पूज्य है, जिन आगम में यही कहा॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः दुष्टसर्प-सिंह-संग्रामादिभय विनाशन-समर्थ-घोर पराक्रमतपऋद्धये अर्घ्यं...॥४४॥

साधक कारण मिलने पर भी, ब्रह्मचर्य से ना डिगते।
भूत-प्रेत भय ऋद्धि हरे जो, ब्रह्मचर्य अघोर कहते॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः भूत-प्रेतादिभयविनाशन-समर्थ-अघोरब्रह्म चारित्व-तपऋद्धये अर्घ्यं...॥४५॥

सब श्रुत का अन्तर्मुहूर्त में, सम्यक् चिन्तन कर जाना।
सम्यक् तप की इस महिमा को, ऋद्धि मनोबल ही माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अपस्माररोगादिभय-विनाशन-समर्थ-मनोबल ऋद्धये अर्घ्यं...॥४६॥

सब श्रुत का अन्तर्मुहूर्त में, शुद्ध पाठ करते जाना।
सूखे कण्ठ थके ना जिह्वा, ऋद्धि वचन बल वह माना॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गो-अजमारी विनाशन-समर्थ-वचनबल- ऋद्धये अर्घ्यं...॥४७॥

बहुत समय तक ध्यान लगाना, किन्तु कायबल कम ना हो।
लोक कनिष्ठा पर रख सकते, ऋद्धि कायबल तप से वो॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः महिषमारी-विनाशन-समर्थ-कायबल ऋद्धये अर्घ्यं...॥४८॥

जिनका तन छू लेने भर से, रोग व्याधि का टल जाना।
है आमर्श औषधी वह तो, सम्यक् तप कारण माना॥भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः प्रलापनचिन्ता विनाशन-समर्थ-आमर्शौषधि ऋद्धये अर्घ्यं...॥४९॥

जिनकी लार-नाक-मल आदिक,खेल्ल, पवन को छू करके।
रोग हरें सब खेल्ल औषधी, ऋद्धि मिले यह तप करके॥
भव्य जीव इस पूज्य ऋद्धि के, स्वामी बनते पलभर में।
अगर बड़ेबाबा को पूजें, भाव सहित धरकर उर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वापमृत्युविनाशन-समर्थ-खेल्लौषधि- ऋद्धये अर्घ्यं...॥५०॥

बाह्य अंगमल जल्ल कहाता, तप से औषध बन जाता।
ऐसी ऋद्धी जल्लौषधि जो, हर ले रोग व्याधि बाधा॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः जन्मजन्मान्तरबैरभावविनाशन-समर्थ-जल्लौषधि ऋद्धये अर्घ्यं...॥५१॥

दाँत कान आदिक के सब मल, तप से औषध बन जाते।
ऋद्धि मलौषधि जानों इससे, रोग कष्ट सब नश जाते॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मनुष्यामरोपसर्गविनाशन-समर्थ-मलौषधिऋद्धये अर्घ्यं...॥५२॥

जिनका मल छू मारुत आकर, भव्य जनों के रोग हरे।
विप्रुष औषध ऋद्धि वह है, दुखियों के दुख दूर करे॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गजमारी-विनाशन-समर्थ-विप्रुषौषधि ऋद्धये अर्घ्यं...॥५३॥

जिनका पूरा तन औषधमय, तप के कारण हो जाता।
पवन नीर छू रोग नशा दे, सर्वौषधि सुख की दाता॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वभयविनाशन-समर्थ-सर्वौषधिऋद्धये अर्घ्यं...॥५४॥

जिनकी अमृत वाणी सुनकर, जहर व्याप्त नर स्वस्थ हुए।
आशी अविष ऋद्धि वह जानो, रोग उसी से दूर हुए॥भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः मृगीरोगविनाशन-समर्थ-मुखनिर्विष-औषधिऋद्धये अर्घ्यं...॥५५॥

जिनकी अमृत दृष्टी पाकर, जहर व्याप्त नर स्वस्थ हुए।
दृष्टी-निर्विष ऋद्धि वह है, रोग उसी से दूर हुए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः नगमेदिनीकृतविघ्नविनाशन-समर्थ दृष्टिनिर्विष ऋद्धये अर्घ्यं...॥५६॥

''मर जा'' कहने पर मर जाए, आशीर्विष वह ऋद्धि कही।
पर इसका उपयोग करें ना, पूज्य तपोधन सुधी वही॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः विद्वेषप्रतिहतादिभय विनाशन-समर्थ-आशीर्विषरस ऋद्धये अर्घ्यं...॥५७॥

रोष दृष्टि से जिसे देख दें, प्राणी वे झट मर जाते।
ऋद्धि दृष्टि विष ना आचारे, सम्यक् तप से जो पाते॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः स्थावरजंगमकृतविघ्नविनाशन-समर्थ-दृष्टिविषरस ऋद्धये अर्घ्यं...॥५८॥

नीरस भोजन कर में आकर, सरस दुग्ध सम हो जाए।
क्षीरस्रावि शुभ पूज्य ऋद्धि वह, सम्यक् तप से मिल जाए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः अष्टादशकुष्टगण्डमालादिकरोग-विनाशन-समर्थ-क्षीरस्राविरसऋद्धये अर्घ्यं...॥५९॥

नीरस भोजन कर में आकर, मधु सम मीठा हो जाए।
मधुस्रावी रस ऋद्धि वही है, सम्यक् तप से मिल जाए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्तोपसर्गविनाशन-समर्थ-मधुस्राविरसऋद्धये अर्घ्यं...॥६०॥

नीरस भोजन कर में आकर, अमृत जैसा हो जाए।
अमृतस्रावी ऋद्धि वही है, सम्यक् तप से मिल जाए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्त-आधिव्याधिविनाशन-समर्थ-अमृतस्राविरस ऋद्धये अर्घ्यं...॥६१॥

नीरस भोजन कर में आकर, घृत जैसा झट हो जाए।
सर्पिस्रावी ऋद्धि वह जो, सम्यक् तप से मिल जाए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्तशीतज्वरादिविकारविनाशन-समर्थ-सर्पिस्राविरस ऋद्धये अर्घ्यं...॥६२॥

मुनि-आहार-पात्र का भोजन, चक्री की सेना खाए।
तो अक्षीणमहानस ऋद्धी-,से वस्तू ना घट पाए॥ भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्तदानान्तरायकर्म-विनाशन-समर्थ-अक्षीणमहानस ऋद्धये अर्घ्यं...॥६३॥

मुनि आलय छोटा सा हो पर, चक्री-सैन्य समा जाए।
है अक्षीणमहालय वह ही, सम्यक् तप से मिल जाए॥भव्य जीव...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः समस्तविध-दरिद्रता विनाशन-समर्थ अक्षीणमहालय ऋद्धये अर्घ्यं...॥६४॥

पूर्णार्घ्य

पूज्य ऋद्धियाँ चौंसठ हैं जो, नाथ बड़ेबाबा सबके।
बाबा की पूजन से होते, सभी स्वप्न सच्चे उनके॥
सभी ऋद्धियों को हम पूजैं, आश्रय लेकर बाबा का।
बनें ऋद्धियों के हम स्वामी, ध्यान करें जब बाबा का॥

(दोहा)

बाबा के शुभ ध्यान से, सहज ऋद्धियाँ होंय।
और अन्त में शीघ्र ही, भव्य-मुक्तियाँ होंय॥६५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः सर्वसांसारिकदुखविनाशन-समर्थ-चतुष्षष्टि ऋद्धभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मन्त्र :- ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः।(१०८बार)

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

पूज्य बड़ेबाबा रहे, गुण सम्पद के कोश।
जिनके कर गुणगान हम, पाते नित सन्तोष॥
जिन के शुभ गुणगान ही, भक्तों के आधार।
सो जयमाला हम करें, देना शिवसुख सार॥

(ज्ञानोदय)

कुण्डलपुर में कुण्डलगिरि जो, सिद्ध क्षेत्र अतिशय प्यारा।
जहाँ बड़ेबाबा का अतिशय, जग विख्यात रहा न्यारा॥
पूज्य केवली श्रीधर स्वामी, गये मोक्ष कुण्डलगिरि से।
वन्द्य बड़ेबाबा को वन्दूँ, भाव सहित अपने उर से॥ १॥
पूज्य मनोहर अतिशयकारी, बाबा मूरत दुख हरती।
किंवदन्ति व्यापारी की जो, अतिशय की गाथा कहती॥
और मुगलराजा की घटना, हम तुम जाने अच्छे से।
पन्ना के राजा को अपना, मिला राज्य प्रभु पूजा से॥ २॥
वर्धमान कहता था कोई, वृषभनाथ कहता कोई।
यक्षगोमुखी चक्री देवी,-को लख,वृषभनाथ होई॥
मन्दिर प्रतिमा कौन बनाये? इसका कुछ इतिहास नहीं।
पर बनवाने वाले होंगे, जैन धर्म के दास सही॥ ३॥

बारह फुट के पद्मासन में, हैं प्राचीन देव प्यारे।
साधक भक्तों के स्वामी हैं, तीन लोक के आधारे॥
ज्ञान सिन्धु के शिष्य निराले, विद्या गुरु छोटेबाबा।
दर्श बड़ेबाबा के करके, कुण्डलपुर रमते बाबा॥ ४॥
यथा बड़ेबाबा की प्रतिमा, तथा नहीं मन्दिर उनका।
तब विशाल मन्दिर की सोची, तभी बड़ा गुरुकुल उनका॥
घूम-घूमकर छोटेबाबा, कुण्डलपुर नित ही आते।
बड़ाबड़ेबाबा का मन्दिर, देख-देख सब हर्षाते॥ ५॥
बाबा को उसमें पहुँचाना, पर प्रतिकूल प्रशासन था।
दयाधर्म के रखवालों ने, दिया उच्च शुभ आसन था॥
देवों से रक्षित यह प्रतिमा , फूल सरीखी पहुँच गयी।
जिसे देख छोटेबाबा की, हर्षित अश्रूधार बही॥ ६॥
यथा विहार बड़ेबाबा का, अन्तरिक्ष सम जिनवर ज्यों।
छोटेबाबा संघ सहित यों, स्वर्ण कमल सम भूपर ज्यों॥
बड़े और छोटेबाबा की, जोड़ी जग में अमर रहे।
देखा दृश्य पुण्य वालों ने, सदियों तक यह खबर रहे॥ ७॥
उच्चासन पर जैसे बैठे, पूज्य बड़ेबाबा अपने।
तभी हुए छोटेबाबा के, शुभ साकार सभी सपने॥
थी जनवरी सत्तरह प्यारी, दो हजार सन् छह प्यारा।
रचा गया लाखों वर्षों को, यह इतिहास अमिट प्यारा॥८॥
पुनः फरवरी तेरह पाकर, समवसरण सा संघ किया।
सुना नहीं ना ऐसा देखा, जिसने सबको दंग किया॥
छोटेबाबा ने अट्ठावन, श्रेष्ठ आर्यिका दीक्षा दीं।
कुण्डलपुर के बाबा द्वय ने, अतिशयकारी कथा रचीं॥९॥
हे परमेश्वर! हे जगपालक!, हे करुणासागर बाबा!
हे जगपूजित! हे उपकारक!, हे मुक्तिरमा- स्वामी बाबा!॥
विश्वशान्तिदायक हे बाबा!, हे बाबा मङ्गलकारी!
हे कुण्डलपुर वाले बाबा! हे बाबा अतिशयकारी!॥१०॥
अर्ज सुनो 'सुव्रत' की बाबा, और भक्तिफल यह दे दो।

कर्म जाल का बन्ध नशाकर, अपनी शरण शीघ्र ले लो॥
रखो ध्यान भक्तों का बाबा, निराश करो न अब हमको।
किन्तु कृपा अब ऐसी कर दो, मिले मुक्ति रानी हमको॥११॥

(दोहा)

बाबा के गुणगान से, बने भक्त गुणवान।
शरण-कृपा-पद पाय कर, शीघ्र बनें भगवान॥
भाव भक्ति से पूजकर, हम कीने जयमाल।
हमको निज सम कीजिए, बाबा बड़े विशाल॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः कुण्डलपुरक्षेत्रस्थ चतुष्षष्टिऋद्धिसम्पन्न-अष्ट प्रातिहार्यसंयुक्त-सर्वविघ्न-विनाशक-सर्वसिद्धिदायक आदिब्रह्मा श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

वृषभनाथ बाबा बड़े, करो विश्व कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेट दो,वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलि...)

प्रशस्ति

विघ्न रोग संकट टले, जो करते गुणगान।
मुझको अनुभव कुछ नहीं, उचित पढ़े विद्वान॥
शरण बड़ेबाबा रही, विद्या गुरु वरदान।
दिये चन्द्रसागर दिशा, 'सुव्रत' लिखे विधान॥
कुण्डलपुर शुभ तीर्थ में, बाबा बड़े महान।
पच्चिस सौ बत्तीस शुभ, महावीर निर्वाण॥
फाल्गुन कृष्ण अमास को, पूरा हुआ विधान।
रात अमावस मोह की, हरें वृषभ भगवान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं...)

(इति बड़ेबाबा विधान सम्पूर्णम्)

कुण्डलपुर बड़ेबाबा दीप अर्चना-ऋद्धि विधान

स्थापना

(ज्ञानोदय)

हे सुखकारी! अतिशयकारी, पूज्य बड़ेबाबा सुखकार।
कुण्डलपुर पर्वत पर शोभित, जिन्हें पूजते सुर-नर-नार॥
पूजा को हम द्रव्य सँजोकर, करते आह्वानन नत माथ।
हृदय कमल के उच्चासन पर, आन विराजो मेरे नाथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

बाह्य मैल से देह मलिन है, उसको जल से सब धोते।
देह सजाकर सब खुश हैं पर, कर्म रोग से सब रोते॥
जनम जरा मृति राग द्वेष को, धोने को हम सब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुचि जल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध आग है महा भयङ्कर, जिसमें जलते संसारी।
आतम वैभव जला उसी में, दुखी भटकते नर नारी॥
तन मन आतम शीतल करने, सभी ताप हरने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, चंदन पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धन बल सत्ता रूप सम्पदा, पा करके जड़ की माया।
नश्वर जीवन में भूले हम, अक्षय आतम ना ध्याया॥
तजकर दुखद जगत पद सारे, प्रभु जैसे बनने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अक्षत पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् ...।

सब रोगों में महारोग है, कामदेव जिसको कहते।
जिसके रोगी भव-भव भटकें, सब दुख संकट वे सहते॥
तीन लोक के इस राजा पर, विजय प्राप्त करने आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, पुष्प समर्पण को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं...।

क्षुधा रोग के कारण हम सब, पाप बन्ध करते जाते।
इसकी औषध करने को हम, भक्ष्याभक्ष्य भखे जाते॥
रोग निरन्तर बढ़ता जाता, इसे नाशने अब आए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ नैवेद्य भेंट लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यें बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

मोह तिमिर के कारण जग में, चारों ओर अँधेरा है।
महाबली इस राजा का ही, सारे जग में डेरा है॥
ज्ञान-दीप के प्रभा पुञ्ज को, देख मोह तम नश जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, दीपक पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

अच्छे बुरे सभी कर्मों ने, हमको बाँधा इस जग में।
सब जल जाता ये ना जलते, सुख-दुख देते पग-पग में॥
धूप सुगन्धी तव-पद-रज से, कर्माष्टक झट जल जाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, धूप चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

फल की इच्छा से इस जग के , हमने काम किए सारे।
पाए खुशी क्षणिक फल पाकर, दुखी हुये जब हम हारे॥
दुखी जगत के सब फल तजकर, मोक्ष महाफल मन भाये।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, शुभ फल पूजन को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं...।

शुचि जल चंदन अक्षत लाए, शुद्ध पुष्प नैवेद्य लिए।
दीप धूप नाना फल मिश्रित, श्रेष्ठ अर्घ्य हम भेंट किए॥
अर्घ्य चढ़ाने वाले भविजन, अनर्घपद आतम पाए।
आज बड़ेबाबा के द्वारे, अर्घ्य चढ़ाने को लाए॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण आषाढ़ को, कुण्डलपुर के नाथ।
वसे गर्भ मरुमात के, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र कृष्ण नवमी तिथी, कुण्डलपुर के नाथ।
जन्मे नाभिराय के, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में मुनि बने, कुण्डलपुर के नाथ।
नग्न दिगम्बर रूप को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, कुण्डलपुर के नाथ।
जगतपूज्य ज्ञानी बने, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चौदस माघ को, कुण्डलपुर के नाथ।
मोक्ष गए कैलाश से, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गल-मण्डिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दीप अर्चना-ऋद्धि विधान अर्घ्यावली

(हाकलिका)

इन्द्री कर्म विजेता हैं, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १॥

अवधिज्ञान के स्वामी हैं, सुंदर अंतरयामी हैं।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २॥

परमावधि के धारी हो, बाबा अतिशयकारी हो।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३॥

सर्वावधि के ईश रहे, देते आशीर्वाद रहे।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञान अनन्तावधि ज्ञाता, मुक्तिवधू के विख्याता।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ५॥

कोष्टबुद्धि को धार रहे, भक्तों को भी तार रहे।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ६॥

बीजबुद्धि के भण्डारी, श्रद्धालु के हितकारी।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ७॥

पदानुसारी मंत्र दिए, जिनशासन जयवंत किए।
बड़े बाबा कुण्डलपुर के, तुमको नमोस्तु सिर धरके॥

ॐ ह्रीं णमो पादाणुसारीणं बड़े बाबा बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ८॥

(जोगीरासा)

सदा-सदा संभिन्नश्रोतृ से, हरें हमारी पीड़ा।
वो संग्राम महा सेनानी, हमको लगते हीरा॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
कुण्डलपुर के बड़े बाबा जी, तुम्हें नमोस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ९॥

आप हमें संसार मोह से, सदा सुरक्षा देते।
आप स्वयंभू आप स्वयं ही, जिनवर दीक्षा लेते॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
कुण्डलपुर के बड़े बाबा जी, तुम्हें नमोस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १०॥

जगत कष्ट पीडा हरने को, पूज्य महाव्रत धारे।
वृषभनाथ प्रत्येकबुद्ध जी, श्री ऋषिराज हमारे॥
सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
कुण्डलपुर के बड़े बाबा जी, तुम्हें नमोस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ११॥

देकर साथ थामकर उँगली, चलना हमें सिखाया।
बोधितबुद्ध निरंजन हैं वो, उनमें धर्म समाया॥

सुनो! प्रार्थनापत्र हमारा, हम हैं भक्त तुम्हारे।
कुण्डलपुर के बड़े बाबा जी, तुम्हें नमोस्तु हमारे॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १२॥

(चौपाई)

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय जो, विघ्न विनाशक देता जय को।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय जो, उच्चासन दे आत्म निलय को।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १४॥

दसपूर्वों के धारक योगी, योग धरो जग करो निरोगी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १५॥

चौदहपूर्वी हो विज्ञानी, सबके भाग्य विधाता स्वामी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १६॥

प्रभु अष्टांगनिमित्त निखारे, सबकी नैया पार उतारे।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

ऋद्धि विक्रिया जो धर लेते, हमको मोक्ष सवारी देते।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १८॥

विद्याधर नर संयमधारी, सबके भगवन अतिशयकारी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ १९॥

चारणऋद्धि धरो तुम स्वामी, हमें सिद्धि सुख दो आगामी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

प्रज्ञाश्रमण जिनेश्वर राजा, हम सबके परमेश्वर बाबा।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २१॥

कमलविहारी गगनविहारी, मोक्षमार्ग दो अतिशयकारी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २२॥

आशीर्विष के तुम धारी हो, दे सुख शांति संसारी को।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो आसीविसाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २३॥

दृष्टिर्विष के हो भण्डारी, आगम के हो आज्ञाकारी।
बड़े बाबा की जय-जय बोलो, करके नमोस्तु अखियाँ खोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २४॥

(दोहा)

उग्रतपों को धारकर, तार रहे संसार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्ततपों को धारकर, करो जगत शृंगार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २६॥

तप्ततपों को धारकर, मोक्षनगर उजयार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २७॥

महातपों को धारकर, सबका करो सुधार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २८॥

घोरतपों को धारकर, दूर करो संहार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोरगुणों को धारकर, घोर वेदना टार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

घोरपराक्रम धारकर, चित् चैतन्य निखार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३१॥

घोरब्रह्मगुण धारकर, सबको पार उतार।
कुण्डलपुर के नाथ को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणबंभयारीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(सखी)

आमर्ष-औषधी ऋद्धि, दे करो स्वयं की शुद्धि।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३३॥

प्रभु खेल्ल-औषधी धारी, शाश्वत सुख के भण्डारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३४॥

प्रभु जल्ल-औषधी धारी, तुम रत्नों के व्यापारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३५॥

प्रभु विप्रुष-औषधि धारी, हो निज आहार विहारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो विप्पोसहिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३६॥

प्रभु सर्व-औषधी धारी, तुम तार रहे नर नारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३७॥

प्रभु सकल मनोबल धारी, बल साहस के दातारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

प्रभु वचन दोष हर्त्तारी, हो वचनबली उपकारी।
बड़े बाबा अंतर्यामी, हम करें नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं णमो वचबलीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(अर्द्ध विष्णु)

बाहुबली सा ध्यान लगाएँ, कायबली आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४०॥

नीर-क्षीर का भेद सिखाएँ, क्षीरस्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

चिदानंद घृत जैसा देते, सर्पिस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४२॥

मधुर-मधुर सा रस झलकाएँ, मधुरस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष जैसी विषबेल नशाएँ, अमृतस्त्रावि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमियसवीणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४४॥

दें अक्षीण-महानस-आलय, महा ऋद्धि आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४५॥

वर्धमान सर्वोच्च सफल गुण, देते हो आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४६॥

सिद्ध-आयतन सिद्ध शिला दें, सिद्धालय आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वसिद्धायदणाणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

णमोकारमय साधु जनों को, नमस्कार आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं बड़े बाबा श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय दीपं.../अर्घ्यं...॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

कुण्डलपुरी के बड़े बाबा, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

बड़े बाबा स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिसम्पन्न श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

नाथ बड़े बाबा बड़े, स्वामी परम दयाल।
भक्ति सहित गुणगान की, कथा करूँ जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

मध्यप्रदेश दमोह जिले में, कुण्डलपुर इक ग्राम रहा।
इसके दक्षिण में इक पर्वत, कुण्डलगिरि शुभधाम रहा॥
ऊपर नीचे जहाँ बहुत से, मन्दिर प्रतिमाएँ प्यारी।
बीचों-बीच बड़ेबाबा की, प्रतिमा है अतिशयकारी॥१॥

अतिशय की है कथा निराली, किंवदन्ति व्यापारी की।
ऐसे पर्वत पर प्रभु आए, खुशी प्रजा तब सारी थी ॥
पद्मासन प्रतिमा मनहारी, चर्चित देश विदेशों में।
तब औरंगजेब था आया, धर्म विरोधी भेषों में॥२॥

मूर्ति विरोधी उसने जैसे, घात लगायी बाबा पर।
दूध धार बह शहद-मक्खियाँ, देखा भागा वह डरकर॥
देखा अतिशय जब वह उसने, बना मूर्ति पूजक सच्चा।
नहीं मूर्तियाँ अब तोडूँगा, नियम लिया उसने अच्छा॥३॥

पन्ना का राजा बेघर था, राज्य हारकर वह अपना।
मन्दिर जीर्णोद्धार कराकर, पूर्ण हुआ उसका सपना॥
बहुत-बहुत है अतिशय प्यारे, श्रद्धा के आधार रहे।
नाथ अनाथों के हो प्रभु तुम, सबको भव से तार रहे॥४॥

चरण आपके तारणहारे, रोग शोक भय नाशक हैं।
इसीलिए तो तुमको ध्याते, सच्चे योगी साधक हैं॥
विद्यागुरुवर छोटेबाबा, पहली बार यहाँ आए।
मन्दिर छोटा सा देखा तो, बहुत बड़ा सब बनवाए॥५॥

उसमें बाबा जाएँ कैसे?, सभी ओर यह चर्चा थी।
किन्तु फूल सी उड़कर पहुँची, भक्ति-पुण्य गुरु अर्चा थी॥
बहुत बड़ा यह अतिशय देखा, किए विहार बड़ेबाबा।
श्रद्धालु लाखों दर्शक थे, संघ सहित छोटेबाबा॥६॥

छोटेबाबा ने उच्चासन, दिया बड़ेबाबा को ज्यों।
बड़ा संघ छोटेबाबा का, किया बड़ेबाबा ने त्यों॥
अट्ठावन बहनों की दीक्षा, हुई आर्यिका श्रेष्ठ बनीं।
दोनों बाबा इक दूजे का, रखते हैं नित ध्यानधनीं॥७॥

ज्ञान-सिन्धु के शुभाशीष से, कुण्डलपुर जब गुरुआए।
कृपा बड़ेबाबा की पाकर, समवशरण सी छवि पाए॥
छोटेबाबा का सपना जो, हुआ समय पाकर सच्चा।
बहुत विरोधी होने पर भी, दिया उच्च आसन अच्छा॥८॥

जो भी आते द्वार आपके, मन वांछित फल पाते हैं।
उभय लोक के वैभव पाकर, मुक्ति रमा पा जाते हैं॥
सो मिलकर हम भक्त पुकारें, टेर सुनो अब तो बाबा।
'सुव्रत' धरकर तुमको पूजें, अपने सम कर लो बाबा॥९॥

(दोहा)

सद्गुण के भण्डार हैं, वृषभनाथ भगवान।
पूजा क्या ? जयमाल क्या ? मैं बालक नादान॥
फिर भी श्रद्धावश किया, पूजन वा जयमाल।
उसका फल बस यह मिले, छूटे भव जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः श्री वृषभजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पूज्य बड़ेबाबा करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
सब कष्टों को मेट दो, वृषभनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े-बाबा अर्हं नमः।

बड़े बाबा की महिमा

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री बड़े बाबा का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥

१. श्री बड़े बाबा आदीश जिनं, हे! करुणाकर हे! जैन धरम।
सो श्रद्धालु को परम दयालु स्वामी, बस कर दो केवलज्ञानी॥श्री..

२. जो नगर अयोध्या जन्म लिए, श्री अष्टापद से मोक्ष गए।
श्री नाभिराय मरुदेवी माँ के प्यारे, हो बाबा बड़े जी हमारे॥श्री..

३. जब छत्रसाल तुमको ध्याये, तो राज्य सम्पदा सुख पाए।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥श्री..

४. जो बने पुजारी बाबा के, वे सुखी हुए गुण धन पा के।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥श्री..

५. बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥श्री..

===

आरती

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम...

१. कुण्डलपुर के आदि स्वामी, धर्मालु हो अंतर्यामी।-२
हम सबके बड़े बाबा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

२. नाभिराय के राज दुलारे, मरुदेवी के नयन सितारे।-२
अयोध्या में अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

३. नृत्य नाच देखे वैरागे, अष्टापद से भव सुख त्यागे।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

आरती

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥

नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आए,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए।
प्रभु जी सब जन मंगल गाए॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥

आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराये,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाए।
प्रभु जी मोक्षमार्ग बतलाए॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥

सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आए,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी झूम-झूम सिर नाये॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया॥

===

कुण्डलपुर के बड़े बाबा चालीसा

(दोहा)

पूज्य बड़े बाबा हरो, हम सब की भव पीर।
आदिनाथ भगवान जी, हमको दो भव तीर॥
सिद्धक्षेत्र अतिशय यहाँ, हम सबको सुखकार।
पूजैं वन्दें हम सभी, पाएं आतम सार॥

(चौपाई)

१. पूज्य बड़े बाबा हितकारी, कुण्डलपुर वाले उपकारी।
उच्च शिखर पर आन विराजे, प्रातिहार्य अद्भुत छवि राजे॥
२. सिद्धक्षेत्र शुभ मंगलकारी, पद्मासन प्रतिमा मनहारी।
ऐसी मूरत और न दूजी, जिसने देखी उसने पूजी॥
३. वृषभनाथजी अतिशयकारी, पार्श्वनाथ खड्गासनधारी।
आजू-बाजू नाथ खड़े हैं, पूज्य आप तो नित्य बड़े हैं॥
४. यह पर्वत कुण्डल के जैसा, तभी नाम कुण्डलपुर तैसा।
उच्च-मध्य में आप विराजे, भक्तों के मन मन्दिर राजे॥
५. ग्राम पटेरा का व्यापारी, पैदल जाता वंजीधारी।
जब-जब पथ से आये-जाए, तब पत्थर की ठोकर खाये॥
६. एक दिवस उसका मन खीझा, पत्थर खोद फेंकने रीझा।
पर असमर्थ हुआ व्यापारी, घर वापिस आया दुखयारी॥
७. उसी रात फिर सपना आया, गाड़ी लेकर वहीं बुलाया।
मूर्ति स्वतः उस पर आएगी, और गाँव तेरे आयेगी॥
८. तू लेकर जब मूर्ति चलेगा, तो पीछे संगीत सुनेगा।
तू यदि मुड़कर देखेगा वो, मूर्ति वहीं रुक जाएगी सो॥
९. सुबह शीघ्र पहुँचा व्यापारी, लेकर अपनी गाड़ी प्यारी।
और वहाँ ज्यों किया खुदाई, मूर्ति निकल गाड़ी पर आई॥
१०. चला मूर्ति ले ज्यों व्यापारी, अद्भुत वाद्य बजे थे भारी।
उसने मुड़कर देखा जैसे, रुकी मूर्ति पर्वत पर तैसे॥
११. फिर वह व्यापारी पछताया, चरण पूजकर शीश झुकाया।
पर्वत पर ऐसे प्रभु आए, भक्तों को अतिशय दिखलाये॥
१२. जब औरंगजेब था आया, मूर्ति नाशने घात लगाया।
उसने वार किया था जैसे, दूध-धार निकली थी वैसे॥
१३. मधू मक्खियों में बदली वो, तब डरकर सेना भग ली सो।
चमत्कार को लख घबराया, अपनी गलती पर पछताया॥
१४. अब तक मैं तो रहा विरोधी, बहुत मूर्तियाँ मैंने तोड़ी।
किन्तु कभी ना अब तोडूँगा, श्रद्धा से उनको पूजूँगा॥

१५. बाबा के जो लोग विरोधी, उनकी जीत कहाँ से होगी?
कौन राह उनको दिखलाए ? दुख कष्टों से कौन बचाए?॥
१६. पन्ना का राजा जब आया, दर्शन करके वह हर्षाया।
मन्दिर जीर्णोद्धार कराया, और शीश पर छत्र चढ़ाया॥
१७. राज्य हारकर वह रोता था, चिन्तित-चिन्तित नित होता था।
कृपा आपकी वह ज्यों पाया, गया राज्य फिर वापिस पाया॥
१८. भव्य भक्त जो बनें पुजारी, उनकी महिमा जग में न्यारी।
यश वैभव सम्मान कमाते, उभय लोक के सुख वे पाते॥
१९. बहुत यहाँ पर अतिशय ऐसे, पूर्ण कहें उनको हम कैसे?
किन्तु भक्तिवश कुछ गुण गाए, सिद्धक्षेत्र को अब सिर नाये॥
२०. मन्दिर प्राङ्गण जब खुदवाया, तब अवशेष वहाँ इक पाया।
चरण-चिह्न वे शिवपुरगामी, पूज्य केवली श्रीधर स्वामी॥
२१. जबसे इसको हम सब जाने, सिद्ध क्षेत्र इसको पहचाने।
अतिशय क्षेत्र सिद्ध भी प्यारा, श्रद्धा आस्था का आधारा॥
२२. यहाँ तिरेसठ मन्दिर प्यारे, ऊँचे-ऊँचे न्यारे-न्यारे।
कुछ पर्वत पर शोभा पाते, कुछ नीचे भी सबको भाते॥
२३. नीचे एक सरोवर प्यारा, वर्द्धमान सागर वह न्यारा।
उसमें एक जिनालय भी है, सबको सुखकारक वो भी है॥
२४. भवसागर से तिरने हेतु, ''ज्ञान साधना केन्द्र'' है सेतु।
वहाँ साधुजन आतम ध्याते, और भक्तजन पुण्य कमाते॥
२५. एक समाधी केन्द्र यहाँ है, वृद्ध व्रतीजन रुके जहाँ हैं।
करें समाधी की तैयारी, जिससे मिलती मोक्ष सवारी॥
२६. यहाँ एक आश्रम है प्यारा, श्रावक-व्रतियों का आधारा।
धर्म-ध्यान वे किए वहाँ हैं, जैनधर्म के दिए जहाँ हैं॥
२७. शान रहा नित भारत की ये, ज्यों शरीर में शोभे हीये।
मध्यप्रदेश दमोह जिला है, जो पूजे सो यह उसका है॥
२८. दूर-दूर से यात्री आते, वन्दन पूजन कर सुख पाते।
वृहताकार धर्मशालायें, रुके वहाँ पर जो भी आएँ॥
२९. करें वन्दना ऊपर नीचे, पुण्यामृत से निज नित सींचे।
भाव सहित जो सिर नाते हैं, मन-वाञ्छित फल वे पाते हैं॥

३०. द्वार आपके हम सब आए, खाली झोली को फैलाए।
बाबा इसको तुम भर देना, अपने सम हमको कर लेना॥
३१. तुमको पूजें सुर नर राजा, और पूजते नित मुनिराजा।
छोटेबाबा भी नित आते, तुम से दूर नहीं रह पाते॥
३२. विद्यागुरु वर छोटेबाबा, आय छियत्तर सन् में बाबा।
प्रथम दर्श कर वे हर्षाए, और आपसे सब कुछ पाए॥
३३. मंदिर देख बड़े बाबा का, हृदय दुखा छोटेबाबा का।
नाम बड़े बाबा है प्यारा, पर मंदिर तो छोटा न्यारा॥
३४. जैसा नाम बड़े बाबा का, वैसा मंदिर हो बाबा का।
सो उपदेश दिये भक्तों को, ठेस लगे ना जिनभक्तों को॥
३५. यहाँ बड़ा मंदिर बन जाए, प्रभुदर्शन सबको मिल पाए।
भक्त दान दें पुण्य कमाएँ, छोटेबाबा नित यह भाएँ॥
३६. श्रद्धा से जो दान करेंगे, वे झोली में पुण्य भरेंगे।
वे सब कर्मों को नाशेंगे, मोक्ष महल को वे पाएँगे॥
३७. भक्त आपके हम अज्ञानी, जपें आपका मंत्र कहानी।
चरण शरण में आए बाबा, शीघ्र हमें अपना लो बाबा॥
३८. मनोकामना पूरी कीजे, पाप विघ्न सबके हर लीजे।
धर्म-ध्वजा को हम फहराएँ, 'सुव्रत' धरकर शीश झुकाएँ॥

(दोहा)

आप बड़ेबाबा रहे, पूर्ण करो लघु आस।
कृपा करो हम पर विभो, करना हृदय निवास॥
श्रद्धावश हमने किया, भक्ति सहित गुणगान।
भूल अगर कुछ हो गयी, क्षमा करो भगवान॥
हमको कुछ ना चाहिए, धन विद्या बल मंत्र।
बस इतना वर चाहिए, भूलूँ ना तव मंत्र॥
चालीसा यह जो पढ़ें, जीवन में अविराम।
विघ्न कष्ट उनके नशें, सफल होंय सब काम॥

===

कुण्डलपुर के बड़े बाबा दीप अर्चना/ऋद्धि विधान के पुण्यार्जक परिवार दमोह

> श्री संतोषकुमार शिक्षक-श्रीमती प्रभा जैन बनवार वाले।
> श्री नेमचंद बजाज-श्रीमती सरिता, श्री सुलभ-श्रीमती खुशबू, महक, दिविजा बजाज।
> श्री शैलेन्द्र बजाज-श्रीमती मुक्ता, आलोक, सिद्धार्थ बजाज।
> श्री विनय जैन शिक्षक-श्रीमती संगीता जैन शिक्षिका।
> स्व. सिं. श्री रतनचंद जैन जुझार वालों की स्मृति में - श्रीमती राजकुमारी जैन पत्रकार, राजेन्द्र अटल, राजेश जैन।
> श्री संगीत कुमार-श्रीमती दिशा, पर्व, काव्य जैन।
> श्री शिखरचंद जैन-श्रीमती रेखा जैन।
> श्री चंद्रकुमार जैन-श्रीमती आशा जैन।
> श्रीमती सरोज जैन शिक्षिका।
> प्रभा बहिन जी।
> श्री विमलचंद-श्रीमती शकुन जैन खजरी वाले।
> कु. अपूर्वा जैन पुत्री सुभाषचंद जैन।
> पं. श्री सुरेशचंद-श्रीमती आशा, अरिंजय जैन।
> ब्र. ममता दीदी।
> श्री नरेन्द्र कुमार-श्रीमती सुनीता जैन।
> श्रीमती कमला उस्ताद मातेश्वरी श्री आशीष उस्ताद।
> श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन नन्हे मंदिर महिला समिति।

प्रकाशक

विद्या सुव्रत संघ